SNEH TEACHERS TRAINING COLLEGE, JAIPUR
"Foster Emotional Intelligence in Youth Through Education" (ICFEIYE-2024)
DATE: 15 April 2024
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविश्वास एवं शिक्षण अभिक्षमता के मध्य सहसंबंध का अध्ययन

डॉ. वर्षा पालीवाल ms.varshapaliwal1976@gmail.com

सारांश

आज बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में षिक्षण–अभ्यास के दौरान उनके आत्मविष्वास, षिक्षण अभिक्षमता में कमी दिखाई देती है जिसका कारण उनकी नकारात्मक सोच को माना जा सकता है जिसके कारण उनमें आत्मविष्वास का अभाव दिखाई देता है। शिक्षक को मानव का निर्माता, राष्ट्र निर्माता, भाग्यविधाता, शिक्षा पद्धति की आधारशिला, समाज को गति प्रदान करने वाला आदि सब कुछ माना गया है। बी.एड. कॉलेजों में अध्ययनरत प्रषिक्षणार्थियों जो कि देश के भावी शिक्षक हैं, जिसमें शिक्षण कार्य करेंगे वह एक सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्था होगी तथा प्रषिक्षणार्थी को विद्यालय में षिक्षा के माध्यम से ही सही दिषा प्रदान की जा सकती है। जिससे उन्हे अपनी–अपनी अहमियत और पहचान मिलती है अगर वातावरण सही होगा तो प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास के विकास मे मदद मिलेगी। उनमें त्याग, ईमानदारी जैसे नैतिक गुणों का विकास होगा। यहां पर वे अपनी प्रतिभा को पहचान पायेगें। शिक्षा एक राष्ट्र की भावी पीढ़ी को तैयार करती है जहां शिक्षक इस प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः प्रषिक्षणार्थी की षिक्षा और परीक्षा में भविष्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन की आवष्यकता है। जो विषय षिक्षार्थियों को पढ़ाए जाने हैं उनके संबंध में अध्यापकों को न केवल ज्ञान वरन् अनुभव भी होना चाहिए। अध्यापक की योग्यता इतनी ही पर्याप्त न समझी जाये वह षिक्षार्थियों को उत्तीर्ण करा दें और अपने दायित्व से छुटकारा पायें। वरन् उसका मूल दायित्व यह होना चाहिए कि जो प्रषिक्षणार्थी उनसे पढ़कर निकलें तो वे पूर्ण आत्मविष्वास, प्रतिभा एवं शालीनता की दृष्टि से ऊँचे स्तर के सिद्ध हों। इसके लिए पाठ पढ़ा देना पर्याप्त नहीं वरन् षिक्षक का निज का जीवन भी इस तरह ढालना होगा कि वे अभिभावक स्तर की भूमिका निभा सके और विद्यार्थियों को अपना स्वयं का बालक समझकर उसके व्यक्तित्व को विकसित करने एवं भविष्य उज्जवल बनाने में उसे प्रोत्साहित करे इसके लिए उन्हें छात्रों से निजी सम्पर्क बनाने होंगे तथा देखना होगा कि उनमें किस स्तर की प्रवृत्तियों का अभिवर्द्धन हो रहा है।

मुख्य–बिन्दुः– बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों, आत्मविष्वास, शिक्षण अभिक्षमता

प्रस्तावना

बी.एड. षिक्षा महाविद्यालयों में पढ़ने वाले प्रषिक्षणार्थी के लिए यह प्रषिक्षण डिग्री कोर्स है। स्नातक तक षिक्षा प्राप्त कर ऐसे प्रषिक्षणार्थी जो आने वाली पीढ़ी को षिक्षा प्रदान करना चाहते हैं या षिक्षक बनने की अभिलाषा रखते हैं उन्हे षिक्षण ज्ञान एवं कौषल दक्षता एवं नवीन तकनीकी जानकारियाँ प्रदान करने के उद्देष्य से षिक्षक प्रषिक्षण हेतु बी.एड पाठयक्रम चलाया जाता है। षिक्षक–प्रषिक्षण की अनेक संस्थाएँ है जो बालकों की अवस्थानुरूप षिक्षण तकनीकी एवं दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। षिक्षा स्नातक पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने पर बी.एड. की उपाधि प्रदान की जाती है। वर्तमान समय में मध्यप्रदेष में हर वर्ष लगभग हजारों बी.एड. प्रषिक्षणार्थी प्रषिक्षित होकर निकलते है। इन षिक्षण षिक्षा संस्थाओं से निकलनेवाले अधिकतर षिक्षकों में षिक्षा और षिक्षण के प्रति अन्तर्दृष्टि विकसित हो रही है या नहीं। षिक्षण कौषलों का कितना विकास हुआ है? षिक्षण कार्य में कितनी रूचि है? प्रषिक्षण के दौरान उनकी षिक्षण अभिक्षमता, षिक्षण प्रभावषीलता, एवं आत्मविष्वास पर क्या प्रभाव पड़ता है? अध्ययन के माध्यम से षिक्षण प्रषिक्षण के दौरान प्रषिक्षणार्थियों में कक्षा–कक्ष व्यवहार उसमें निहित आत्मविष्वास से षिक्षण प्रभावषीलता का पता लगाये बिना, हम अच्छे प्रषिक्षणार्थियों को आम अध्यापक से कैसे अलग करेंगे? इसलिये शोधार्थी ने अपने शोध का विषय **बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अभिक्षमता के मध्य सहसंबंध का अध्ययन**

समस्या कथन

बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अभिक्षमता के मध्य सहसंबंध का अध्ययन

संक्रियात्मक परिभाषा

षोधार्थी ने षोध प्रकरण में प्रयुक्त तकनीकी षब्दों बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास, षिक्षण अभिक्षमता, को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है।

बी.एड. प्रशिक्षणार्थी

बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों से अर्थ 2 वर्षीय पाठ्यक्रम में प्रवेशित प्रषिक्षणार्थियों से हैं जो शिक्षा में स्नातक उपाधि की षिक्षा प्राप्त करते है। इसमें प्रषिक्षणार्थियों को विद्यालयों में अध्यापक के रूप में षिक्षण कार्य करने हेतु तैयार किया जाता है। यह पूर्वस्नातक व्यावसायिक उपाधि है। प्रस्तुत शोध में बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों से अर्थ भोपाल जिले के शासकीय एवं अशासकीय शिक्षा महाविद्यालयों में 2 वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेशित प्रषिक्षणार्थियों से है।

आत्मविश्वास

आत्मविष्वास एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है। आत्मविष्वास से ही विचारों की स्वाधीनता प्राप्त होती है और इसके कारण ही महान कार्यों के सम्पादन में सरलता और सफलता मिलती है। इसी के द्वारा आत्मरक्षा होती है। जो व्यक्ति आत्मविष्वास से ओत–प्रोत है, उसे अपने भविष्य के प्रति किसी प्रकार की चिन्ता नहीं रहती। उसे कोई चिन्ता नहीं सताती। दूसरे व्यक्ति जिन सन्देहों और शंकाओं से दबे रहते हैं, वह उनसे सदैव मुक्त रहते हैं। यह प्राणी की आंतरिक भावना है। इसके बिना जीवन में सफल होना अनिष्चित हैं। **शांति देव के अनुसार– "आत्म विष्वास को सकारात्मक कार्यों में लागू होना चाहिए अपनी क्षमताओं के साथ भ्रांतियों को नकारते एवं जीतते हुए यह सोचना कि मैं अकेला यह सब कर सकता हूँ ही क्रियाओं का आत्मविष्वास है। इस प्रकार आत्मविष्वास के द्वारा ही व्यक्ति अपने कार्यों में सफल हो पाता है, क्योंकि आत्मविष्वास हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।"**

शिक्षण अभिक्षमता

शिक्षण की गुणवत्ता शिक्षक की अभिक्षमता पर आधारित होती है। क्योकि अध्यापक की अभिक्षमता शिक्षक की तत्परता अथवा

किसी कार्य के प्रति रूचि अथवा रूझान से होती है तथा अभिक्षमता का संबंध विषेष योग्यताओं से होता है। स्वाभाविक सी बात है कि किसी व्यक्ति में जितनी अधिक योग्यतायें होगी वह व्यक्ति उतना ही अधिक प्रभावशाली व्यक्तितत्व से परिपूर्ण होगा। शिक्षक का अध्यापन अभिक्षमता से अत्यंत गहरा संबंध होता है। अभिक्षमता एक वर्तमान स्थिति है, जो भविष्य की ओर संकेत करती है। योग्यता एवं अभिक्षमता में अंतर है।

योग्यता– इसका संबंध वर्तमान से होता है। यह दक्षताओं, आदतों एवं शक्तियों जो कि व्यक्ति में अभी है, जो व्यक्ति को कुछ करने के योग्य बनाती है की ओर संकेत करती है।

अभिक्षमता– यह भविष्य की ओर संकेत करती है, जो व्यक्ति वर्तमान आदतों, दक्षताओं और योग्यता के आधार पर भविष्यवाणी करती है। यह व्यक्ति प्रषिक्षण द्वारा व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेगा।

अध्ययन के उद्देश्य

1. षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अक्षिमता के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अक्षिमता में कोई सार्थक सह सम्बंध नहीं हैं।
2. **उप–परिकल्पना1.1**–षासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अक्षिमता में कोई सार्थक सह सम्बध नहीं ळें
3. **उप–परिकल्पना** –अषासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अक्षिमता में कोई सार्थक सह सम्बध नहीं है।

भारत में हुए शोधो का पुनरावलोकन

कुल्हरि, आर. (2012) ने **"विभिन्न संकायों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आकांक्षा–स्तर, आत्मविष्वास एवं नैतिक निर्णय का तुलनात्मक अध्ययन"** षीर्षक पर शोधकार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों के आत्मविष्वास में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। जबकि मध्यमानों के आधार पर कला संकाय के विद्यार्थियों के मध्यमान अधिक है। अतः निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों का आत्मविश्वास उच्च स्तर का होता है।

मलिक, यू., एवं सिंधु, पी. (2015) ने **"बी.एड. छात्र शिक्षकों में शिक्षण अभिक्षमता के संबंध में उनकी बुद्धिमत्ता का अध्ययन"** के षीर्षक पर शोधकार्य किया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य– (1) बी.एड. छात्र शिक्षकों की बुद्धि और शिक्षण अभिक्षमता के बीच संबंधों का अध्ययन करने के लिए। (2) बी.एड. छात्र शिक्षकों की बुद्धि और शिक्षण अभिक्षमता का एक दूसरे के साथ सहसंबद्ध का अध्ययन। शोध की वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग छात्र शिक्षकों के आचरण, उनकी बुद्धि के संबंध अध्ययन की योग्यता की जांच करने किया गया। हरियाणा के गुड़गांव, फरीदाबाद, मेवात और रेवाड़ी जिल के विभिन्न बी. एड. कॉलेजों में पढ़ रहे 600 बी.एड. के छात्र शामिल थे जिसमें ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. कॉलेजों से 300 (150 पुरुष और 150 महिला) और शहरी क्षेत्र 300 (150 पुरुष और 150 महिला) बेतरतीब ढंग से चुना गया। डेटा एकत्र करने के लिए उपकरण के रूप में टीचिंग एप्टीट्यूड स्केल (2002) द्वारा एल.सी. सिंह और दहिया और एस. के. पाल और के. एस. मिश्रा द्वारा जनरल इंटेलिजेंस (2012) का परीक्षण के ळिये इस्तेमाल किया गया। निष्कर्ष–अध्ययन से पता चलता है कि बुद्धि का शिक्षण अभिक्षमता के साथ सार्थक सहसंबद्ध हैं। बी.एड. छात्र शिक्षकों की बुद्धि, शिक्षण अभिक्षमता को प्रभावित करती है।

षोध प्रविधि

एक उपयुक्त षोध अध्ययन विधि का चयन हो जाने पर आधा षोधकार्य सम्पन्न हुआ माना जा सकता है इसलिए षोधार्थी द्वारा षोध समस्या का हल प्राप्त करने के लिए एक उचित अध्ययन विधि चुनने का प्रयास किया गया है। अध्ययन के लिये षोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।

न्यादर्ष

प्रस्तुत षोध के लिये षोधार्थी द्वारा न्यादर्ष के चयन के लिये स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्ष विधि का चयन किया गया। न्यादर्ष के रूप में भोपाल जिले के बी. एड. महाविद्यालयों से 400 प्रशिक्षणार्थियों को षोध कार्य के लिये चुना गया है। इन प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न चरों के आधार पर निम्न प्रकार से विभाजित है

महाविद्यालयों के प्रषासन के आधार पर न्यादर्ष का चयन

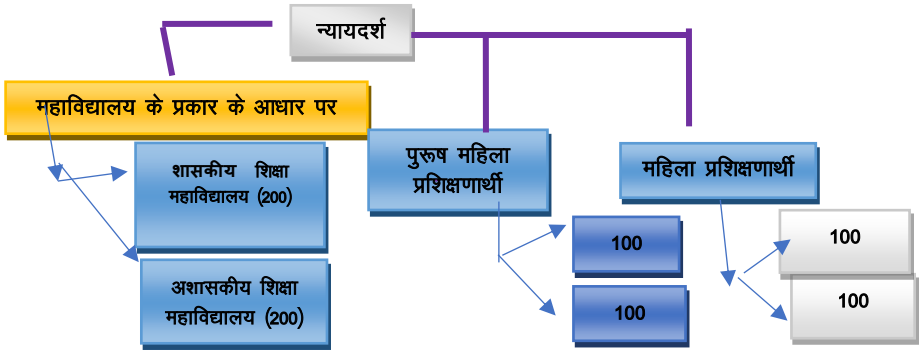

प्रस्तुत षोध प्रबन्ध में निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

तालिका क्रमांक–2

क्र.सं.	उपकरण का नाम	निर्माता
1	आत्मविष्वास	डॉ. रेखा गुप्ता
3	षिक्षण अभिक्षमता	डॉ. अषोक शर्मा

सांख्यिकी प्रविधियां

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रशासित परीक्षणों से प्राप्त प्रदत्तों को सर्वप्रथम व्यवस्थित किया गया। प्रदत्तों के कुल योग आदि के अनुसार संक्षिप्त रूप दिया गया, ताकि प्रस्तुत तथ्यों का सरलता से सांख्यिकी एवं विश्लेषण हेतु प्रयोग किया जा सके। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं के परीक्षण एवं प्रदत्तों के विष्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

उद्देश्य क्रमांक 1 : बी.एड प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास,, षिक्षण अश्क्षिमता के मध्य सहसम्बन्ध।**मुख्य परिकल्पना–1 षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता में कोई सार्थक सह सम्बध नहीं है।**

षोधार्थी ने सुविधा के लिये षोध परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए (2) उप परिकल्पनाओं में विभाजित किया गया जो निम्नवत् है–

.1.1 उप–परिकल्पना– षासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता में कोई सार्थक सह सम्बध नहीं है।

1.2 उप–परिकल्पना– अषासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियो के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता में कोई सार्थक सह सम्बध नहीं है।

परिकल्पना–1 शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं शिक्षण अश्क्षिमता में कोई सार्थक सह सम्बध नहीं है।

सारणी क्रमांक–.1

शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक

चर	संख्या	मध्यमान	स्वतंन्त्रता के अंष	सारणीमान	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता 0.05 स्तर
आत्मविष्वास	400	27.22	398	.098	–.197	च झ 0ण्05
शिक्षण अश्क्षिमता		86.77				

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास का मध्यमान 27.22 है। तथा षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत

बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों की षिक्षण अश्क्षिमता का मध्यमान 86.77 है। षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक ;तद्ध –.197 है। जबकि स्वतंन्त्रता के अंष 398 पर 0.05 स्तर पर सारणीमान .098 है। इस प्रकार परिकलित मान सारणीमान से अधिक है। अर्थात् .098 ढ .197। अतः सहसम्बन्ध सार्थक है।

इस प्रकार कह सकते हैं कि षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता के मध्य सार्थक ऋनात्मक सहसम्बन्ध है। इस प्रकार परिकल्पना क्रमांक 1 **"शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं शिक्षण अश्क्षिमता में कोई सार्थक सह सम्बध नहीं है।"** असत्य है एवं अस्वीकृत होती है।

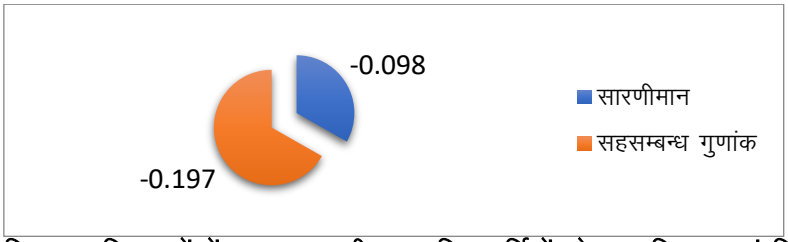

आकृति क्रमांक–1 शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं शिक्षण अश्क्षिमता के मध्य सहसम्बन्ध का आरेखीय प्रस्तुतीकरण

.1.1 उप–परिकल्पना –षासकीय शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता में कोई सार्थक सह सम्बध नहीं है।

सारणी क्रमांक.1.1

षासकीय शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं शिक्षण अश्क्षिमता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक

चर	संख्या	मध्यमान	स्वतंन्त्रता के अंष	सारणीमान	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता 0.05 स्तर
आत्मविष्वास	200	25.31	198	.138	—.039	च ढ 0ण्05
शिक्षण अश्क्षिमता		91.19				

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1.1 से स्पष्ट है कि षासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास का मध्यमान 25.31 है। तथा षासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों की षिक्षण अश्क्षिमता का मध्यमान 91.19 है। षासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक ;तद्ध —.039 है। जबकि स्वतंन्त्रता के अंष 198 पर 0.05 स्तर पर सारणीमान .138 है। इस प्रकार परिकलित मान सारणीमान से अधिक है। अर्थात् .138 झ —.039। अतः सहसम्बन्ध सार्थक नहीं है। इस प्रकार कह सकते हैं कि षासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है। इस प्रकार परिकल्पना क्रमांक.1.1 **"षासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता में कोई सार्थक सह सम्बध नहीं है।"** सत्य है एवं स्वीकृत होती है।

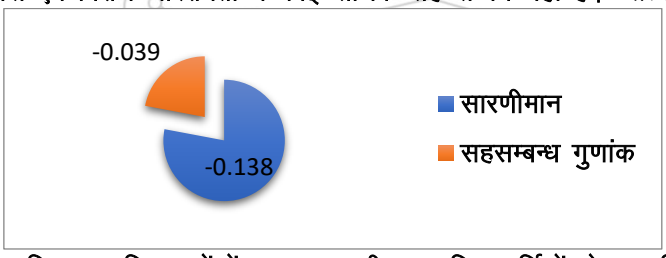

आकृति क्रमांक—1.1 षासकीय शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता के मध्य सहसम्बन्ध का आरेखीय प्रस्तुतीकरण

1.2 उप—परिकल्पना— अषासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता में कोई सार्थक सह सम्बध नहीं पाया जाता है।

सारणी क्रमांक—1.2

अषासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1.2 से स्पष्ट है कि अषासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास का मध्यमान 29.1 है। तथा अषासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड.प्रषिक्षणार्थियों की षिक्षण

चर	संख्या	मध्यमान	स्वतंन्त्रता के अंष	सारणीमान	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता 0.05 स्तर
आत्मविष्वास	200	29.1	198	.138	.010	च ढ 0ण्05
शिक्षण अश्क्षिमता		82.3				

अश्क्षिमता का मध्यमान 82.3 है। अषासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक ;तद्ध —.010 है। जबकि स्वतंन्त्रता के अंष 198 पर 0.05 स्तर पर सारणीमान .138 है। इस प्रकार परिकलित मान सारणीमान से कम है। अर्थात् .138 झ —.010। अतः सहसम्बन्ध सार्थक नहीं है। इस प्रकार कह सकते हैं कि अषासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है। इस प्रकार परिकल्पना क्रमांक .1.2 "अषासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता में कोई सार्थक सह सम्बध नहीं है।" सत्य है एवं स्वीकृत होती है।

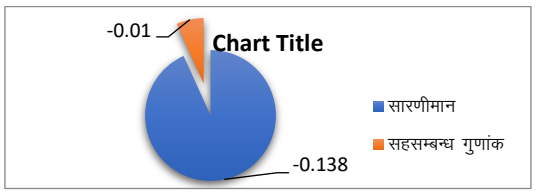

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

आकृति क्रमांक–.1.2 अषासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता के मध्य सहसम्बन्ध का आरेखीय प्रस्तुतीकरण

निष्कर्ष

उद्देश्य–1 परिकल्पना क्रमांक 1 :– षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता में कोई सार्थक सह सम्बध नहीं है। निष्कर्ष में षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता के मध्य सार्थक ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया है। इस प्रकार परिकल्पना क्रमांक असत्य है एवं अस्वीकृत होती है।

(संदर्भ सारणी क्रमांक –1)

उप–परिकल्पना–1.1 षासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता में कोई सार्थक सह सम्बध नहीं है। निष्कर्ष में षासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया है। इस प्रकार परिकल्पना क्रमांक सत्य है एवं स्वीकृत होती है।

(संदर्भ सारणी क्रमांक –1.1)

उप–परिकल्पना– 1.2 अषासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता में कोई सार्थक सह सम्बध नहीं है। निष्कर्ष में अषासकीय षिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के आत्मविष्वास एवं षिक्षण अश्क्षिमता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया है। इस प्रकार परिकल्पना क्रमांक सत्य है एवं स्वीकृत होती है।

(संदर्भ सारणी क्रमांक –1.2)

सन्दर्भ ग्रंथ सूचीः–

- .भारत में शैथिक व्यवस्था का विकास (2007) त्णण्ैतउंए के. सी. वशिष्ठ, डा0 प्रवीणा कलश्रेष्ठ, अ.एच.पी. सिंह राधा प्रकाशन मंदिर – आगरा
- शिक्षा अनुसंधान – (2007) दमधुसूदन त्रिपाठी –ओमेगा पब्लिकेशन नई दिल्ली
- शैक्षिक अनुसंधान विधिया –(2007) श्रीमति शशिकला सरीन, डा0 अंजनी सरीन विनोद पुस्तक मंदिर– आगरा
- भारत में शिक्षा – स्तर, समस्याएं एवं मुद्दे (2016) पी.डी. शर्मा, श्री विनोद पुस्तक मंदिर ,आगरा
- भारत में शिक्षा स्थिति, समस्याएं व मुद्दे –(2007) अ अरूणा गुप्ता, अं शशिकांत यादव, दिनेश अजानिया ठाकुर पब्लिशर्स, भोपाल
- भारतीय शिक्षा की सम–सामयिक समस्याए (1996) अं एस. डी. त्यागी, पी. पाठक विनोद पुस्तक मंदिर
- अधिगम कर्त्ता का विकास तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया (2012) बी.एस.शर्मा साहित्य प्रकाशन आगरा
- अध्यापक शिक्षा श्री मति आर के शर्मा, श्री कृष्ण दुबे आर के उपाध्याय, श्री मधूसूदन लाल राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान एस.ए. हल्की, अ अनीता बरौलिया राधा प्रकाशन मंदिर
- **कुल्हरि, आर. (2012).** विभिन्न संकायों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आकांक्षा–स्तर, आत्मविष्वास एवं नैतिक निर्णय का तुलनात्मक अध्ययन। पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, उच्च अध्ययन षिक्षा संस्थान विष्वविद्यालय, गाँधी विद्या मंदिर सरदारषहर, चूरु, राजस्थान।
- **मलिक, यू., एवं सिंधु, पी. (2015).** बी.एड. छात्र शिक्षकों में शिक्षण अभिक्षमता के संबंध में उनकी बुद्धिमत्ता का अध्ययन। इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च, 4(10), 2250–1991
- IJCRT1133015 International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT) www.ijcrt.org 124
- https://shodhganga.inflibnet.ac.in/
- http://www.education.nic.in/
- http://www.aeademicjournals.org/